१७. गढ़ों और नौसेना का प्रबंधन

शिवाजी महाराज ने अनेक शत्रुओं पर विजय पाकर स्वराज्य की स्थापना की। युद्ध हो अथवा राज्य प्रशासन; शिवाजी महाराज का प्रबंधन कौशल सभी क्षेत्रों में दिखाई देता है । इस पाठ में हम शिवाजी महाराज के प्रबंधन कौशल की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

क्या तुम जानते हो ?

● प्रबंधन कौशल किसे कहते हैं ?

निश्चित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए स्वीकारे हुए कार्य को अनुशासनबद्ध पद्धति से करना प्रबंधन कौशल कहलाता है ।

शिवाजी महाराज का प्रबंधन कौशल जिस प्रकार उनके द्वारा आजीवन किए गए युद्धों में सदैव दिखाई देता है; उसी तरह वह उनके संपूर्ण राज्य प्रशासन में भी दिखता है । इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

गढ़ों का निर्माण

शिवाजी महाराज ने गढ़ों और किलों की सहायता से स्वराज्य की रक्षा की । शिवकालीन ग्रंथ 'आज्ञापत्र' में दुर्गों अर्थात गढ़ों का महत्व 'संपूर्ण राज्य का सार अर्थात दुर्ग' इन सटीक शब्दों में बताया गया है । शिवाजी महाराज अपनी युवावस्था में सह्याद्रि पर्वतश्रेणियों में घूम चुके थे। सह्याद्रि पर्वत की गोद में बने गढ़-दुर्गों को उन्होंने कई बार निहारा था । स्वराज्य के संरक्षण में गढ़ों का महत्व उनके ध्यान में आया था ।

शिवाजी महाराज ने वनदुर्ग, गिरिदुर्ग और जलदुर्ग जैसे विभिन्न प्रकार के गढ़ों का निर्माण करवाया । जलदुर्गों को 'जंजिरा' भी कहते हैं । उन्होंने हिरोजी इंदुलकर और अर्जोजी यादव जैसे विशेषज्ञों द्वारा राजगढ़, प्रतापगढ़, सिंधुदुर्ग आदि नए गढ़ों का निर्माण करवाया । इसी तरह रायगढ़ का नए-से निर्माण करवाया । यही नहीं; विजयदुर्ग, तोरणा, रांगणा आदि कुछ पुराने गढ़ों की मरम्मत करवाई । शिवाजी महाराज के पास लगभग तीन सौ गढ़/किले थे ।

क्या तुम जानते हो

● माना जाता है कि शिवाजी महाराज के छोटे बेटे छत्रपति राजाराम महाराज की आज्ञा से रामचंद्रपंत अमात्य ने 'आज्ञापत्र' ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में शिवाजी महाराज की राजनीति का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई देता है ।

करके देखो

● दीवाली की छुट्टी में मित्रों की सहायता से किसी किले की प्रतिकृति तैयार करो ।

– किला बनाने के लिए आवश्यक सामग्री की सूची बनाओ ।

– किले के लिए स्थान निश्चित करो ।

– किले पर पेयजल, आवासों की व्यवस्था किस प्रकार होनी चाहिए इसका ढाँचा बनाओ ।

बताओ तो

- तुम्हारे परिसर में पाए जानेवाले किलों/गढ़ों/गुफाओं के नाम बताओ ।
- किले/गढ़ पर कौन-कौन-सी वस्तुएँ/वास्तु हैं ?
- किले का प्रकार बताओ ।

गढ़ का निर्माण कार्य

गढ़ों का प्रबंधन

शिवाजी महाराज ने गढ़ों की सुनिश्चित संरक्षण व्यवस्था की थी ।

प्रत्येक गढ़ पर किलेदार, सबनीस और कारखानीस जैसे अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी । सबनीस और कारखानीस किलेदार के अधीन रहकर कार्य करते थे।

इन अधिकारियों के कार्य इस प्रकार बताए जा सकते हैं ।

किलेदार (हवलदार)

- किलों/गढ़ों की रक्षा करना एवं प्रशासन देखना ।
- सबनीस, कारखानीस को आदेश देना ।
- सरकारी पत्रों, हुक्मों और आदेशों का पालन करना ।

सबनीस

- गढ़ के आय-व्यय का हिसाब रखना ।
- गढ़ पर और गढ़ के नीचे रहनेवाली प्रजा से कर वसूल करना ।
- पत्र व्यवहार करना ।

कारखानीस

- गढ़ पर रहनेवाले लोगों को अनाज और अन्य वस्तुओं की आपूर्ति करना ।
- युद्‌ध के समय तोपों और बंदूकों में लगनेवाली बारूद की व्यवस्था करना ।
- गढ़ और उसपर बनी इमारतों का रख-रखाव और मरम्मत करना ।

तोपें और बारूद

शिवाजी महाराज के समय शत्रुओं से गढ़ों/किलों का संरक्षण करने के लिए छोटी-बड़ी तोपों का उपयोग किया जाता था । ये तोपें किलों के परकोटों और बुर्जों पर रखी जाती थीं । पुरंदर, भीमगढ़ जैसे कुछ गढ़ों पर तोप निर्माण करने के कारखाने भी थे । लोहा, पीतल, तांबा आदि धातुओं से तोपें बनाई जाती थीं । बरसात के दिनों में गढ़ों पर रखीं तोपों में जंग न लगे; इसलिए उनपर मोम का लेप लगाया जाता था । शत्रुओं पर चोट अथवा आघात करने के लिए तोपों में लोहे, पत्थर और कुलुफ के गोलों (जिसमें सीसे के छर्रे होते हैं) का उपयोग करते थे । इन तोपों को चलाने के लिए स्फोटक बारूद का उपयोग किया जाता था ।

विचार विमर्श करो

- गढ़ पर लगीं तोपों में जंग न लगे; इसलिए उनपर मोम का लेप लगाया जाता था ।

बताओ तो

- शिवाजी महाराज की नौसेना के युद्धपोतों के प्रकार बताओ । जैसे - गुराब (काक) गलबत, पाल, मचवा, नाव, जलपोत ।
- स्वतंत्र भारत की नौसेना के युद्धपोतों के नाम बताओ ।

नौसेना

युद्धपोतों के दल को नौसेना कहते हैं । अंग्रेज, पुर्तगाली, सिद्दी, डचों के पास प्रबल नौसेना थी । इनमें से कुछ लोग समुद्री तट के गाँवों में जाकर लूटपाट करते थे । वहाँ के लोगों को कष्ट पहुँचाते

शिवाजी महाराज-नौसेना का निरीक्षण करते हुए

थे। इन समुद्री शत्रुओं का स्थायी रूप में निर्मूलन करने हेतु शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र नौसेना का निर्माण करवाया ।

शिवाजी महाराज ने छोटे-बड़े जलपोत और नौकाएँ बनाने के कारखाने खोले । सागर में बने पुराने जलदुर्ग जीतकर वे अपने नियंत्रण में कर लिये । सुवर्णदुर्ग और विजयदुर्ग जैसे जलदुर्गों की मरम्मत करवाई । शिवाजी महाराज ने मालवण के समीप कुरटे द्वीप पर सिंधुदुर्ग नामक नए जलदुर्ग का निर्माण करवाया । इसी तरह मुंबई के निकट खांदेरी गढ़ का निर्माण करवाया ।

स्वराज्य की नौसेना में कोली, भंडारी, आगरी जैसे विभिन्न सागरीय जाति-धर्मों के सैनिक थे । इसी कालखंड में दौलत खान, मायनाक भंडारी, लाय पाटील, दर्यासारंग, तुकोजी आंग्रे जैसे अनुभवी नौसेना योद्धाओं ने ख्याति पाई ।

मराठों की नौसेना के कारण अंग्रेज, पुर्तगाली, सिद्दी और डच जैसे समुद्री शत्रु उनसे भयभीत रहने लगे । परिणामस्वरूप शत्रुओं से स्वराज्य को पहुँचनेवाली त्रस्तता में कमी आई । शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र नौसेना का निर्माण कर उसके बल पर अपनी सागरीय सीमा निश्चित कर दी और तटीय क्षेत्र पर अपना स्वामित्व प्रस्थापित किया । साथ ही अपने सागरीय तट को सुरक्षित कर लिया । मध्ययुगीन कालखंड के भारत में शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित यह पहली स्वयं की नौसेना थी । अतः छत्रपति शिवाजी महाराज का 'भारतीय नौसेना का जनक' के रूप में सही अर्थ में गौरव बढ़ाया जाता है ।

शिवाजी महाराज का गुप्तचर विभाग : शिवाजी महाराज की सैनिकी व्यवस्था में गुप्तचर विभाग था । उनके गुप्तचर विभाग का प्रमुख बहिर्जी नाईक था । बहिर्जी नाईक द्वारा लाई गई अचूक जानकारी उपयोगी सिद्ध होने से शिवाजी महाराज द्वारा चलाए गए सूरत अभियान जैसे अनेक अभियान सफल हुए । शिवाजी महाराज के गुप्तचर गोपनीय ढंग से शत्रु के दल में प्रवेश कर शत्रुपक्ष की छोटी-सी-छोटी हरकत की जानकारी प्राप्त कर लेते थे । कोई भी आक्रमण करने से पूर्व शिवाजी महाराज गुप्तचरों से पूरी जानकारी प्राप्त करते और उसके पश्चात ही आक्रमण की योजना बनाते ।

छापामार युद्धप्रणाली : शिवाजी महाराज की युद्धनीति में छापामार युद्ध प्रणाली को विशेष महत्व था । छापामार युद्ध प्रणाली में अपनी सुविधा और अनुकूल समय में शत्रु पर अचानक आक्रमण करना और इसके पहले कि शत्रु इस आक्रमण से संवरे-संभले; तब तक सेना का सुरक्षित स्थान पर पहुँचना जैसी नीतियों का समावेश था । इस प्रणाली का अनुसरण करते समय शिवाजी महाराज को सह्याद्रि पर्वतश्रेणियों के घने जंगलों, पर्वतीय किलों और सामान्य लोगों के समर्थन का सहयोग प्राप्त हुआ ।

क्या तुम जानते हो ?

● शिवाजी महाराज की सेना अनुशासनबद्ध थी । उनके सैनिक स्त्रियों का सम्मान करते थे । अतः स्त्रियों के रक्षक के रूप में शिवाजी महाराज की कीर्ति दूर तक फैली हुई थी । सैनिक शराब न पीएँ, प्रजा को पीड़ा न पहुँचाएँ, जनता को न लूटें; इस प्रकार की कड़ी चेतावनी उन्होंने सैनिकों को दे रखी थी ।

क्या तुम जानते हो ?

● शिवाजी महाराज के कुछ सहयोगी- कान्होजी जेधे, वीर बाजी पासलकर, फिरंगोजी नरसाला, प्रतापराव गुजर, सिधोजी निंबालकर और सिद्दी हिलाल ।

१. बताओ तो !

(अ) दुर्गों का महत्त्व बतानेवाला ग्रंथ ....

(आ) जलदुर्गों को .... भी कहते हैं ।

२. तुम्हें क्या लगता है बताओ ।

(अ) छत्रपति शिवाजी महाराज का 'भारतीय नौसेना का जनक' के रूप में सही अर्थ में गौरव बढ़ाया जाता है।

(आ) शिवाजी महाराज का प्रबंधन कौशल किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देता है ?

३. गढ़ों पर निम्न अधिकारियों के दो कार्य लिखो :

(अ) किलेदार – १. .... २. ....

(आ) सबनीस – १. .... २. ....

(इ) कारखानीस – १. .... २. ....

४. महाराष्ट्र के मानचित्र प्रारूप में निम्न स्थान दिखाओ ।

(अ) सिंधुदुर्ग किला (आ) विजयदुर्ग

(इ) मुंबई (ई) प्रतापगढ़

५. छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रबंधन कौशल की कौन-सी बात तुम्हें सब से अच्छी लगी ? उस बात का तुम अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार उपयोग करोगे ?

उपक्रम :

(अ) 'शिवाजी महाराज से साक्षात्कार का आयोजन' यह साक्षात्कार नाटिका कक्षा में प्रस्तुत करो ।

(आ) भारतीय नौसेना के युद्धपोतों के विषय में जानकारी प्राप्त करो ।

(इ) विभिन्न गढ़ों की सैर करो और गढ़ों के विविध अंगों के नामों की जानकारी प्राप्त करो ।

6KGIAF